IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 28, Issue 12, Series 1 (December, 2023) 89-95
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

पर्यावरण शिक्षा का महत्व व आवश्यकता एक भौगोलिक अध्ययन

सुनील गुप्ता
सहायक आचार्य, भूगोल विभाग,
देवनारायण राजकीय कन्या महाविद्यालय , बयाना, जिला भरतपुर , राजस्थान

शोध पत्र सारांश

पर्यावरण एक व्यापक अवधारणा है। मनुष्य जिस प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक और राज्य में रहता है, वह सब उसका पर्यावरण है। लेकिन पर्यावरण शिक्षा केवल अपने प्राकृतिक पर्यावरण के ज्ञान तक ही सीमित है, यह और बात है कि इसके तहत इसके प्राकृतिक पर्यावरण के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों का भी अध्ययन किया जाता है। वर्तमान दौर में पर्यावरण असंतुलन की सबसे बड़ी समस्या ग्लोबल वॉर्मिंग है तथा जिसकी वजह से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है और मानव जीवन के कदम विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। ऐसे समय में अगर हमने पर्यावरण को बचाने के लिए कोई बड़ा कदम नहीं उठाया तो वह दिन दूर नहीं, जब हमारा अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। इसलिए हमे जितना जल्दी हो ये जान लेना चाहिए की मानव जाति के कल्याण एवं अस्तित्व के लिए पर्यावरण का संरक्षण एवं सुधार आवश्यक है। भूमि, वायु, पानी जैसे प्राकृतिक संसाधनो का प्रयोग बुद्धिमतापूर्ण ढंग से करना चाहिए ताकि वर्तमान और भावी पीढी के लिए स्वस्थ पर्यावरण को सुनिश्चित किया जा सके । अतः इस शोध पत्र में हम पर्यावरण शिक्षा के महत्व व आवश्यकता के संदर्भ में भौगोलिक अध्ययन कर रहे हैं ।

मुख्य बिन्दु :– पर्यावरण शिक्षा, उद्देश्य, आवश्यकता, महत्व एवं पर्यावरण शिक्षा व जागरूकता कार्यक्रम ।

परिचय :–

पर्यावरण शिक्षा अध्ययन की एक प्रक्रिया है जो पर्यावरण व इससे जुड़ी चुनौतियों के सम्बन्ध में लोगों की जानकारी और जागरूकता को बढ़ाती हैं, चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक कुशलताओं व प्रवीणता को विकसित करती हैं पर्यावरण शिक्षा की जड़ें शुरू से ही मानी जाती हैं। प्राचीन काल से ही गुरुकुलों और आश्रमों को प्राकृतिक संसार की रक्षा करने की शिक्षा दी जाती थी। पौराणिक कथाओं में नैतिक शिक्षा के साथ–साथ पर्यावरण शिक्षा का भी उल्लेख मिलता है। यानी शुरू से ही सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षा दी जाती रही है।

"पर्यावरण शिक्षा" वास्तव में पर्यावरण से संबंधित विश्व समुदाय को दी जाने वाली शिक्षा है ताकि वे समस्याओं से अवगत हो सकें और उनका समाधान ढूंढ सकें और साथ ही भविष्य में आने वाली समस्याओं को रोक सकें। "पर्यावरण शिक्षा" जिम्मेदारियों को समझने और विचारों को स्पष्ट करने की प्रक्रिया है ताकि मनुष्य अपनी संस्कृति और जैव–भौतिक पर्यावरण के बीच अपने स्वयं के संबंधों को पहचानने और समझने के लिए आवश्यक कौशल और दृष्टिकोण विकसित कर सके।

पर्यावरण शिक्षा से संबंधित कुछ परिभाषाएं :–

1) "पर्यावरण शिक्षा" पर्यावरण की गुणवत्ता से संबंधित मामलों के लिए व्यवहार संहिता बनाने और निर्णय लेने की आदत को भी व्यवस्थित करती है।

2) "पर्यावरण शिक्षा" का अर्थ सीखने की वह प्रक्रिया है जो पर्यावरणीय चुनौतियों के बारे में ज्ञान और जागरूकता को बढ़ावा दे सकती है और साथ ही उनसे निपटने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में मदद करती है।

3) "पर्यावरण शिक्षा" पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने का एक साधन है। पर्यावरण शिक्षा किसी विज्ञान या विषय के अध्ययन की अलग शाखा नहीं है। इसे जीवन भर पूर्ण शिक्षा के तहत आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

4) "पर्यावरण शिक्षा" का मुख्य उद्देश्य नागरिकों के बीच पर्यावरण की सुरक्षा और प्रबंधन के लिए उनकी जिम्मेदारियों के बारे में जागरूकता पैदा करना और बढ़ाना है।

पर्यावरण – शिक्षा की परिभाषाएँ और इसके क्षेत्र का अध्ययन करने पर पर्यावरण शिक्षा के निम्नलिखित अनुप्रयोग स्पष्ट हैं–

1. यह एक प्रक्रिया है जो मनुष्य और उसके सांस्कृतिक एवं जैविक वातावरण के सिद्धांतों का बोध कराती है।

2. इस प्रक्रिया से मनुष्य को पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान, कौशल, समझ, अभिवृत्तियाँ, विश्वास और मूल्य से उन्नत किया जाता है जो पर्यावरण में सुधार करता है।

3. इसमें पर्यावरण के विकास और सुधार का प्रयास किया जा रहा है।

4. पर्यावरण शिक्षा में भौतिक, जैविक, सांस्कृतिक और मनोविज्ञान में पर्यावरण का ज्ञान और जानकारी दी जाती है और वास्तविक जीवन में उनकी सार्थकता को समझने का प्रयास किया जाता है।

5. पर्यावरण की गुणवत्ता के लिए निर्णय लिया जाता है, अभ्यास किया जाता है और सभी समस्याओं का समाधान किया जाता है।

6. पर्यावरण– शिक्षा से ज्ञान, कौशल, बोध, विश्वास, अभिवृत्तियाँ और सिद्धांतों का विकास जीवन में प्रेरणा प्रदान करता है जिससे जीवन उत्तम बन सके।

7. पर्यावरण– शिक्षा द्वारा बालक स्वयं प्राकृतिक–जैविक एवं पर्यावरण की समस्याओं को पुनर्जीवित करने में समर्थ बनता है तथा उसका समाधान भी वह स्वयं करता है जिससे उसके जीवन का विकास होता है।

8. पर्यावरण– शिक्षा समस्या केन्द्रित, अन्तः निर्दिष्ट आयाम, मूल्य और समुदाय की दिशा, भविष्य की ओर दर्शन, मानव विकास और जीवन से संबंधित है। इसका संबंध भविष्य से होता है।

पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य :–

न्छम्ब्ब् के अनुसार ," पर्यावरणीय शिक्षा पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को लागू करने का एक तरीका है। यह विज्ञान की एक अलग शाखा नहीं है, बल्कि अध्ययन का एक सतत अंतर–विषयक क्षेत्र है।" साथ ही पर्यावरणीय शिक्षा की महत्ता को समझते हुए इसे सतत् विकास लक्ष्यों के अंतर्गत ैक्ळ–4.7 के रूप में भी शामिल किया गया है।

- ★ आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं पारिस्थितिक अंतर–निर्भरता एवं इनसे जुड़ी चुनौतियों के संदर्भ में जागरूक करना।
- ★ प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण की रक्षा और सुधार के लिये आवश्यक ज्ञान, मूल्य, दृष्टिकोण, प्रतिबद्धताओं एवं कौशल प्राप्ति के लिये अवसर प्रदान करना।
- ★ पर्यावरण के प्रति समग्र रूप से व्यक्तियों, समूहों और समाज के व्यवहार में सकारात्मक सुधार करना।

इतना ही नहीं, बल्कि पर्यावरण शिक्षा एक व्यापक और एकीकृत शिक्षा प्रयास है, जिसमें व्यवहार शोधन के तीनों पहलू– संज्ञानात्मक पक्ष, भावात्मक पक्ष और कार्यात्मक पक्ष शामिल हैं। पर्यावरण शिक्षा का मुख्य लक्ष्य विश्व है। जनसंख्या को पर्यावरण और उससे संबंधित समस्याओं के बारे में जागरूक और सक्रिय बनाना होगा, ताकि वे पर्यावरण के प्रति जागरूक हो सकें। संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता की भावना विकसित करके हम इस दिशा में यथासंभव प्रयास कर सकते हैं। पर्यावरण शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों को अचिह्नित तरीके से लिखा जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन, टिब्लसी (1977) में पर्यावरण शिक्षा के अनुयायी का उल्लेख किया गया हैकृ

1. पर्यावरण की चेतना का विकास करना तथा पर्यावरण की चेतना का प्रति नामकरण विकसित करना।

2. पर्यावरण के पिछड़े एवं अन्योन्याश्रित संबंध में ज्ञान एवं अनुभव प्रदान करना।

3. पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य के स्वरूप, पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य का बोध तथा पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य का परिप्रेक्ष्य।

4. पर्यावरण की संभावनाओं के समाधान, परियोजना कौशल और सिद्धांतों का विकास करना।

5. पर्यावरण के सम्बन्ध में भावना, अभिवृत्तियाँ तथा अपवित्रता का विकास करना तथा सक्रिय भाग लेना अभिआकर्षण करना जिससे पर्यावरण का संरक्षण तथा सुधार हो सके।

6. छात्रों को व्यावसायिक रोजगार अवसर प्रदान करना। सभी पूर्वोन्मुख सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देना, सभी अधीनस्थों का समाधान किया जाना।

पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता :–

पर्यावरण शिक्षा का कार्य इस पृथ्वी पर रहने वाले जीवों को उस पर आने वाली विपदाओं से बचाना और उन्हें सुखी जीवन देने का प्रयास करना है। साथ ही उन्हें भविष्य में होने वाली समस्याओं के बारे में पहले से पता होना चाहिए और उनका समाधान इस तरह से खोजना चाहिए कि समस्या भी दूर हो जाए और नियमित जीवन प्रक्रिया में कोई बाधा न आए। आइए हम शिक्षा की आवश्यकता के कारणों को इस प्रकार समझने का प्रयास करें–

१) पृथ्वी सौरमंडल का एकमात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन संभव है। इसलिए इसे हर हाल में विनाश से बचाना है। ताकि इस पर रहने वाले जानवरों को सुरक्षित और सुखी जीवन प्रदान किया जा सके।

2) जनसंख्या वृद्धि आज पूरे विश्व की समस्या है। जिससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है। इसलिए इसे संतुलित करने के लिए पर्याप्त प्रयास करें।

3) प्रकृति के पास विशाल संसाधनों का सीमित भंडार है। जिनका सही और बुद्धिमानी से उपयोग किया जाता है, उनके बारे में जागरूकता तभी आ सकती है जब संबंधित शिक्षा का विस्तार किया जाए।

4) चूंकि कार्बन डाइऑक्साइड को ऑक्सीजन में परिवर्तित करने में वनों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः वातावरण में ऑक्सीजन की आवश्यक मात्रा को बनाए रखने के लिए तथा कार्बन डाइऑक्साइड की वृद्धि से होने वाली पर्यावरणीय विकृतियों से अवगत कराने के लिए।

5) औद्योगिक क्रांति से उत्पन्न प्रदूषण, इसके कारणों और प्रभावों का ज्ञान तभी सीखा जा सकता है जब पर्याप्त शिक्षा प्राप्त हो।

6) पर्यावरण के विभिन्न घटक एक दूसरे के साथ कैसे परस्पर क्रिया करते हैं, इसके बारे में उचित जानकारी प्रदान करना।

7) पर्यावरण और स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों पर चर्चा करना और पर्यावरण के बारे में जागरूकता पैदा करना।

8) क्षेत्रीय पर्यावरण से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करना और उन्हें हल करने के तरीके प्रस्तुत करना।

पर्यावरण शिक्षा का महत्व :–

पर्यावरण के बारे में विस्तृत चिंतन के आधार पर जब बुद्धिजीवियों ने पर्यावरण के संरक्षण, संरक्षण और सुधार की बात की। तभी से इसके लिए कुछ नैदानिक और उपचारात्मक तरीकों को अपनाने पर जोर दिया जाने लगा। स्टॉकहोम (1972) में आयोजित "मानव पर्यावरण" पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में इस बिंदु को रखा गया था और एक प्रस्ताव भी पारित किया गया था कि पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने और दूर करने के लिए 'पर्यावरण शिक्षा' कार्यक्रम की संभावना सन्निहित थी। जाना। निश्चित रूप से वे आधार बिंदु जिन पर (बेलग्रेड चार्टर–1975) तिवलिसी अंतर्देशीय सम्मेलन (1977) ने पर्यावरण शिक्षा के कार्यक्रम को मंजूरी दी और पर्यावरण शिक्षा के कार्यक्रम की उपयोगिता को स्पष्ट किया, सभी पर्यावरण शिक्षा के महत्व के अंतर्गत आते हैं।

उपरोक्त सम्मेलनों में पारित विभिन्न प्रस्तावों के परिणामस्वरूप 'पर्यावरण शिक्षा' के महत्व को हम मोटे तौर पर समझ सकते हैं–

1. पर्यावरण–शिक्षा के द्वारा वायु के महत्व, वायु प्रदूषण के प्रभाव और उनके निषेध के उपायों की जानकारी प्राप्त होती है।

2. पर्यावरण–शिक्षा के जल के महत्व, जल–प्रदूषण के उद्देश्य और उनके निषेध के उपायों की जानकारी प्राप्त होती है। साझीदार जल पीने, पर्यावरण या संस्थान से मानव शरीर में कौन–कौन सी बीमारियाँ पैदा होती हैं, इसकी जानकारी शिक्षा से ही संभव है।

3. प्रारंभिक शिक्षा भारी हुई जनसंख्या के दुष्परिणामों का ज्ञान। बहुआयामी प्रदूषण के कारण वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि–प्रदूषण बढ़ रहा है। मूल शिक्षा के एवं जनसंख्या संरक्षण परिवार–संरक्षण–संचेतना जन समुदाय में जागरूकता की जा सकती है।

4. पर्यावरण–शिक्षा हमको हमारे जीवन में वनों एवं अनुसंधानों के महत्व को स्पष्ट करता है। वन–संरक्षण, वनों का महत्व आदि विषयों का ज्ञान पर्यावरण–शिक्षा के द्वारा प्राप्त होता है।

5. पर्यावरण–शिक्षार्थियों द्वारा यह अवबोध दिया जा सकता है कि पर्यावरण को संरक्षित एवं सुरक्षित रखें हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

6. पर्यावरण–शिक्षा प्राकृतिक संसाधनों के सीमित उपयोग एवं भावी अवशेषों के सुरक्षित रख–रखाव का ज्ञान है। इसके ज्ञान के बिना हम पर्यावरण को संरक्षित नहीं कर सकते।

7. मूल शिक्षा प्राचीन सांस्कृतिक अर्थशास्त्र की शिक्षा है। यह समग्र पृथ्वी का दृष्टिकोण विकसित करता है। यह विश्वबन्धुत्व का पाठ पढ़ता है और 'जियो और जियो दो' की भावना पैदा करता है।

पर्यावरण शिक्षा व जागरूकता कार्यक्रम :–

भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफएंडसीसी) ने मिशन लाइफ पर जोर देते हुए विश्व पर्यावरण दिवस 2023 मनाए जाने की परिकल्पना की है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई मिशन लाइफ की अवधारणा का उद्देश्य लोगों को अपनी जीवन शैली में बदलाव लाने के लिए प्रोत्साहित करके स्थायी जीवनचर्या को बढ़ावा देना है और पर्यावरण की सुरक्षा एवं संरक्षण के उद्देश्य से संसाधनों के जिम्मेदारी तथा जागरूकता के साथ उपयोग पर बल देना है।

वर्तमान समय में मिशन लाइफ के लिए व्यापक जागरूकता और पर्याप्त समर्थन की भावना उत्पन्न करने के लिए पूरे भारत भर में मिशन लाइफ पर एक महीने का जन सहभागिता अभियान चल रहा है। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने "संपूर्ण सरकार" और "संपूर्ण समाज" के दृष्टिकोण का पालन करते हुए मिशन लाइफ के संदेश को फैलाने के उद्देश्य से केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों, राज्य/केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारों/प्रशासनों, संस्थानों व निजी संगठनों को इस पहल में शामिल किया है। 5 जून 2023 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने के लिए चल रहे जन सहयोग अभियान का लक्ष्य अखिल भारतीय स्तर पर सहयोग और मिशन लाइफ के बारे में जागरूकता को विस्तार देना है।

1. पर्यावरण संबंधी जानकारी, जागरूकता, क्षमता निर्माण एवं आजीविका कार्यक्रम (ईआईएसीपी) :–

पर्यावरण संबंधी जानकारी, जागरूकता, क्षमता निर्माण एवं आजीविका कार्यक्रम (ईआईएसीपी) केंद्रीय क्षेत्र की उप–योजनाओं में से एक है, जिसे मिशन लाइफ के साथ गठबंधन में कार्यान्वित किया जा रहा है। वर्तमान जन सहभागिता अभियान के एक भाग के रूप में करीब 60 ईआईएसीपी केंद्र सक्रिय रूप से स्थायी जीवनशैली के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने में लगे हुए हैं, जिसे नागरिक अपना सकते हैं। पूरे भारत भर में ईआईएसीपी केंद्रों द्वारा मई 2023 के महीने में कार्रवाई एवं जागरूकता पर ध्यान केंद्रित करते हुए 2,387 से अधिक मिशन लाइफ से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। इन आयोजनों ने पर्यावरण के प्रति जागरूक करने वाली गतिविधियों में भाग लेने के लिए 89,000 से अधिक लोगों को सफलतापूर्वक इस कार्यक्रम से जोड़ा है। इसके अतिरिक्त, ईआईएसीपी नेटवर्क के माध्यम से छात्रों, व्यक्तियों और संस्थानों द्वारा 80,432 से अधिक मिशन लाइफ प्रतिज्ञा ली गई हैं। कार्यक्रमों की विस्तृत श्रृंखला में फोटोग्राफी, निबंध लेखन, वाद–विवाद, प्रश्नोत्तरी, जागरूकता और आउटरीच पहल, स्वच्छता अभियान, मिशन लाइफ पर विषयगत वेबिनार, साइकिल रैली, वृक्षारोपण अभियान, सार्वजनिक स्थानों जैसे बस स्टॉप आदि पर लाइफ होर्डिंग लगाना शामिल हैं। इन सभी के जरिये मिशन लाइफ के कार्यों को बढ़ावा दिया जा रहा है। जिनमें ई–रिक्शा, प्लास्टिक संग्रह अभियान, कार्यशालाएं और लाइफ प्रतिज्ञा का अनुसरण करना शामिल है। कई ईआईएसीपी केंद्र स्कूलों एवं कॉलेजों में नुक्कड़ नाटक, पेंटिंग, युवा संसद सम्मेलन और मिशन लाइफ से संबंधित जनभागीदारी कार्यक्रम जैसी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन कर रहे हैं।

2. पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम (ईईपी) :–

केंद्रीय क्षेत्र की एक उप–योजना है, जो अन्य विषयों के साथ–साथ स्कूलों और कॉलेजों में इको–क्लब से जुड़ी हुई गतिविधियों को सशक्त करने के लिए गैर–औपचारिक पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने के लिए कार्यान्वित की जा रही है।

पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम को भारत में स्थायी जीवन शैली को बढ़ावा देने के सामान्य लक्ष्य को साझा करते हुए राज्य/केंद्र शासित प्रदेश स्तर की कार्यान्वयन एजेंसियों के माध्यम से मिशन लाइफ के साथ पूर्ण एकत्रीकरण में लागू किया गया है। चूंकि इको–क्लबों की गतिविधियों का व्यापक प्रभाव पड़ता है, विशेषकर जब बच्चे किसी संदेश को अपने परिवार एवं अपने समाज में आगे तक ले जाते हैं। ऐसे में इको–क्लबों का उपयोग लाइफ पर संदेश फैलाने हेतु एक प्रभावी माध्यम के रूप में किया जाता है और इस प्रकार यह विश्व पर्यावरण दिवस समारोह के लिए चलाए जा रहे जन सहयोग अभियान का एक अभिन्न अंग है। स्कूल/कॉलेज स्तर पर आयोजित जागरूकता व कार्रवाई कार्यक्रमों के अलावा, कार्यान्वयन एजेंसियां मिशन लाइफ में जन सहायता के लिए विभिन्न पहल भी करती हैं। 5 मई, 2023 को जन सहभागिता अभियान की शुरुआत के बाद से ईईपी और इको–क्लबों की कार्यान्वयन एजेंसियों ने मिलकर 17.8 लाख छात्रों, शिक्षकों आदि की भागीदारी के साथ मेरी लाइफ पोर्टल पर 38,000 से अधिक जागरूकता व कार्रवाई कार्यक्रम दर्ज किए हैं। इको–क्लबों द्वारा की गई गतिविधियों में प्रतिज्ञा, वृक्षारोपण, रैलियां, जागरूकता सत्र, वर्मीकम्पोस्टिंग, किचन गार्डन, क्विज प्रतियोगिता, स्वच्छता अभियान, नुक्कड़ नाटक, मोटा अनाज आधारित खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देना आदि शामिल हैं। इस कार्यक्रम के तहत लगभग 17.4 लाख प्रतिज्ञाओं को भी पंजीकृत किया गया है। ईईपी की कार्यान्वयन एजेंसियों ने प्राकृतिक शिविर, इको–कला कार्यशाला, चिकनी मिट्टी और साधारण मिट्टी के बर्तनों की कार्यशाला, इको–फ्रेंडली ग्रीन वेडिंग आइडियाज को बढ़ावा देना, औषधीय पौधों के लिए जागरूकता अभियान, इको क्लब के छात्रों की मदद से सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ समाज में अभियान चलना, पेंटिंग प्रतियोगिता, हस्ताक्षर लेना, मिशन लाइफ के संदेशों के साथ नाम व स्टिकर का वितरण आदि जैसी कुछ बहुत ही अनूठी तथा पर्यावरण–अनुकूल गतिविधियों का आयोजन किया है।

निष्कर्ष :–

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि हमें प्राकृतिक संसाधनों का उचित और बुद्धिमानी से उपयोग करना चाहिए। ऊर्जा बचाने, वनों की रक्षा, प्रदूषण को रोकने, स्वच्छ पानी, शुद्ध भोजन, हवादार आवास और स्वच्छ वातावरण प्रदान करने के लिए हमेशा प्रयास करना चाहिए। सुरक्षित और स्वस्थ जीवन का परिणाम पर्यावरण शिक्षा की सफलता में छिपा है। मनुष्य और अन्य जीव अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए पर्यावरण पर निर्भर हैं। शुद्ध हवा, शुद्ध पानी और शुद्ध भोजन आदि के लिए पर्यावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऐसे में इन सभी चीजों के महत्व को समझने और संरक्षण की सोच विकसित करने के लिए पर्यावरण शिक्षा बहुत आवश्यक है यानी पर्यावरण शिक्षा के बिना मानव कल्याण और संपूर्ण पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सार्थक और दिशात्मक प्रयास संभव नहीं हैं अतः हम कह सकते हैं कि पर्यावरण शिक्षा निश्चित रूप से आज के समय के लिए एक महत्वपूर्ण "ज़रूरत" है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. स्वान, जावेद (1969, सितंबर). पर्यावरण शिक्षा की चुनौती. फी डेल्टा कप्पन, 51, 26–28.
2. स्टाप, डब्ल्यू एट अल. (1970, मार्च). पर्यावरण शिक्षा की अवधारणा. एजुकेशन डाइजेस्ट, 35 (7), 8–10.
3. मेलोन,ज्ञ. 1999 के.एच., पर्यावरण एक्टिविस्ट के रूप में पर्यावरण शिक्षा शोधार्थी, एंवयार्मेंटल एजुकेशन रिसर्च 5(2):163–177.
4. पामर, जे.ए, 1998, 21वीं सदी में पर्यावरण शिक्षाः सिद्धांत, अभ्यास, प्रगति और वादा, राउतलेज ।
5. विज्ञान (मक.), 1997, पर्यावरण शिक्षा, विज्ञान, की पूर्ण जांच व मरम्मत, 276:361.

6ण स्मिथ, जे.सी.2006, एन्वायरमेंट एंड एजुकेशनः अ व्यू ऑफ़ चंगिंग सीन, पर्यावरण शिक्षा शोध 12(3,4) :247–264.

7ण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, अनुच्छेद 84, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार (शिक्षा विभाग), नई दिल्ली 1986 ।177

8ण पर्यावरण संबंधी जानकारी, जागरूकता, क्षमता निर्माण एवं आजीविका कार्यक्रम, भारत सरकार मई 2023

9ण सयुक्त राष्ट्र संघ पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम 2023